International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.4, April 2013
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित अल्पसंख्यक मुस्लिम किसान जीवन

डॉ. रामकिंकर पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शास. लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी

श्रीमती विनीता पाण्डेय
शोध छात्रा हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.
रीवा (म.प्र.)

सार :

हिन्दुस्तान समस्त विश्व में प्रजातियों व संस्कृतियों के संगम के रूप में जाना जाता है। इस सांस्कृतिक बहुलता वाले देश में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोलने वाले लोग हैं और विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी रहते हैं। इन प्रमुख धर्मों के अनुयायी समुदायों की सामाजिक आर्थिक और जनसांख्यिकीय रूपरेखा में काफी भिन्नता परिलक्षित होती है। 'अल्पसंख्यक' शब्द की व्याख्या समाज विज्ञानियों के अध्ययन का विषय रहा है। वेब्सटर शब्दकोश में इसे परिभाषित करते हुए कहा गया है, ''अलग पहचान की भावना और प्रस्थिति की जागरूकता रखने वाला समूह, आमतौर पर वृहद समूह से अलग जिसका यह अंश होता है या माना जाता है।'' आक्सफोर्ड शब्दकोश में अल्पसंख्यक को यूँ परिभाषित किया गया है– ''छोटे होने की स्थिति या तथ्य या ऐसी संख्या जो पूरी संख्या की आधी से कम हो।'' प्रस्तुत शोध पत्र स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित अल्पसंख्यक मुस्लिम किसान जीवन को प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना :

भारत की सामाजिक धार्मिक संरचना के अनुसार हिन्दुओं को छोड़कर सभी धर्मो के लोग अल्पसंख्यक हैं। अगर हम आंकड़ो पर नजर डालें तो पता चलता है कि इस समय देश की जनसंख्या का 82 प्रतिशत हिन्दू, 12.12 प्रतिशत मुसलमान, 2.23 प्रतिशत ईसाई, 1.94 प्रतिशत सिक्ख, 0.76 प्रतिशत बौद्ध और 0.40 प्रतिशत जैन हैं। इस दृष्टि से मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध और जैन अल्पसंख्यक हैं। इनमें मुसलमान सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग है। भारत के सामाजिक ताने–बाने में इनकी अहम् भूमिका है। ये गाँवों, कस्बों, शहरो और महानगरों सब जगह रहते हैं और कृषि, उद्योग, सेवा क्षेत्र, शिल्प

Please cite this Article as : डॉ. रामकिंकर पाण्डेय, श्रीमती विनीता पाण्डेय**:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.4, April 2013**

आदि सभी क्षेत्रों में हाथ बँटाते हैं। मुस्लिमों की एक बड़ी आबादी है जो गाँवों में रहती है और खेती किसानी से जुड़ी है।हिन्दी उपन्यास साहित्य में अल्पंख्यक किसानों का चित्रण हमें प्रेमचंद के उपन्यासों से देखने को मिलता है। उनके कई उपन्यासों के पात्र अल्पसंख्यक समुदाय से हैं, जो गाँवों में रहते हैं और खेती–किसानी का कार्य करते हैं तथा मजदूर और श्रमिक वर्ग के भी हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों 'कायाकल्प', 'रंगभूमि' आदि में चित्रित अल्पसंख्यक समुदाय के किसान समाज का एक अभिन्न हिस्सा बनकर रहते हैं और एक दूसरे के सुख दुख, त्यौहार, उत्सव शादी–विवाह आदि में शामिल होते हैं। अल्पसंख्यक किसानों की वहाँ हमें कोई अलग पहचान नहीं दीखती।

विवेचना :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में अल्पसंख्यक वर्ग का चित्रण एक वृहद कैनवस में होता है। यूँ तो छिटपुट रूप से कई उपन्यासों में अल्पसंख्यक किसानों का वर्णन मिलता है पर वृहद रूप से अल्पसंख्यक वर्ग के किसानों का वर्णन राही मासूम रज़ा के 'आधा गाँव' में ही मिलता है। 'गंगौली' में मुसलमानों की एक बड़ी संख्या है जो ज़मींदार भी हैं और सामान्य किसान भी। फुन्नन मियाँ इसके एक पात्र हैं जो जमींदार है। राही ने गाँवों में रहने वाले मुसलमानों की समस्याओं को गहरी संवेदना और यथार्थ की मजबूत पकड़ के साथ अंकित किया है। ''वास्तव में 'आधा गाँव' गाजीपुर की तलाश के परिप्रेक्ष्य में एक सही गाँव गंगौली कथाकार की जन्मभूमि की पकड़ और वहाँ से गुजरने वाले समय की कहानी है।''[1] उपन्यास के केन्द्र में एक ही गाँव है और वह भी आधा, जिसमें लेखक जीता है उस पर आने वाली मुसीबतों का चित्रण करता है। भारत–पाकिस्तान बंटवारे की पृष्ठभूमि में गाँव में रहने वाले मुस्लिमों का चित्रण राही ने बड़ी प्रमाणिकता से किया है।

'आधा गाँव' हिन्दी का पहला उपन्यास है जिसमें मुस्लिम जीवन और ग्रामीण संस्कृति का चित्रण समग्रता में मिलता है। समग्र उपन्यास में जो स्वर गूंजता रहता है वह यही कि मुसलमान भी इसी देश के वासी हैं, उनको भी अपने घर, गांव और देश की मिट्टी से उतना ही प्यार है जितना कि किसी भी देशभक्त हो सकता है। गांवों में रहने वाले इन अल्पसंख्यक किसानों का जीवन भी वैसा ही है जैसा कि अन्य वर्ग के किसानों का। ''हिन्दुओं की तरह वे भी अंधविश्वासों और रूढ़ियों से ग्रस्त हैं। वे भी प्यार और घृणा करते हैं। सुख–दुख का अनुभव करते हैं और वहीं की भाषा बोलते हैं। कुछ धार्मिक मान्यताओं, रूढ़ियों और रीतिरिवाजों में भिन्नता के बावजूद दोनों कौमों के जीवन व्यापार और बोली–बानी में समानता है। जातीयता का यही आधार दोनों कौमों को एक करने वाला प्रधान सूत्र है।''[2]

इस उपन्यास में राही मासूम रज़ा ने एक बड़ी बात यह कही है कि खेती से जुड़ा हुआ, जमीन से जुड़ा हुआ अल्पसंख्यक किसान किसी भी कीमत पर पाकिस्तान जाने को तैयार नहीं है, वह अपनी जमीन छोड़ना ही नहीं चाहता, जहाँ उसकी जमीन है वही उसका मुल्क है। उपन्यास का एक पात्र मिगदाद साफ कहता है– 'अम ना जाए वाले हैं कहीं। जायें ऊ लोग जिन्हें हल बैल से शरम आती है। हम त किसान हैं तन्नू भाई, जहाँ हमारा खेत तहाँ हम।''[3] इस तरह विभाजन के बाद भी अल्पसंख्यक किसान पाकिस्तान जाने को तैयार नहीं है। पाकिस्तान जाते हैं जमींदार वर्ग के लोग या फिर बेहतर भविष्य की आशा करने वाले नौजवान, मिगदाद जैसा किसान पाकिस्तान नहीं जाता। पाकिस्तान जाते हैं मौलवी बेदार, उनके बारे में हुसैन अली मियाँ से बात करते हुए फुन्नन मियाँ का यह कथन देखने लायक है– ''तू ई मत सोचिहो कि ऊ पाकिस्तान एह मारे गए हैं कि देहली के इमाम बाड़े पर सिख लोग कब्जा कर लिहिन हैं, एह मारे गए हैं कि गंगौली में रहे का कौनों सहारा न रह गवा रहा। कउन बूते पर रहते। आस–औलाद रही ना, हल चलाने आता न रहा और फुस्सु मियाँ की तरह जूते की दुकान खोले की हिम्मत ना रही। तो कह दीहिन कि हम ई मुलक में ना रहेंगें जिसमें इमामबाड़े पर सिख लोग कब्जा कर लिहिन हैं। अब्बू मियाँ का भी यही हशर होने वाला है। ऊहौ गंगौली में थोड़े ही दिन के मेहमान हैं। बाकी तू लूली–लंगड़ी खेती कर रह्यौ। तू तो जमीन छोड़ के पाकिस्तान ना जा सकत्यौ.....।''[4] आधा गाँव के अतिरिक्त शानी का 'काला जल', भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़', मंजूर एहतेशाम के सूखा बरगद, जगदीश चन्द्र के 'धरती धन न अपना'; अब्दुल विस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' आदि उपन्यासों में भी गांवों में रहने वाले अल्पसंख्यक किसानों के जीवन की जानकारी मिलती है।

उपसंहार :

यद्यपि कि 'अल्पसंख्यक किसान' जैसा कोई विभाजन सिर्फ मुसलमानों के लिए ही नहीं है, पर अन्य धर्मों की जो जनसंख्या है उसका लगभग न के बराबर हिस्सा ही गांवों में रहता है और खेती किसानी उनका मुख्य पेशा है भी नहीं, इसलिए उनसे सम्बन्धित उपन्यास हिन्दी में देखने को नहीं मिलते। हिन्दी उपन्यासकारों ने किसानों से सम्बन्धित जो उपन्यास लिखे हैं उनमें मुस्लिमों का चित्रण है जिनका विवेचन ही इस अध्याय मे किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1) आधुनिक हिन्दी उपन्यास, भीष्म साहनी, पृ. 495
2) हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद, (सं.) निर्मला जैन, नित्यानंद तिवारी, पृ. 60
3) आधा गाँव– राही मासूम रज़ा, पृ. 226
4) पूर्वोक्त, पृ. 352